उत्तरी अमेरिका महाद्वीप की प्राकृतिक बनावट (Natural Landscape of North America)

स्थिति एवं विस्तार (Status and Extent)

क्षेत्रफल की दृष्टि से उत्तर अमेरिका संसार का तीसरा सबसे बड़ा महाद्वीप है। विश्व का मानचित्र देखने से ज्ञात होता है कि यह पूरा महाद्वीप उत्तरी गोलार्द्ध में स्थित है। इसका अक्षांशीय विस्तार 10^0 उत्तरी अक्षांश से 80^0 उत्तरी अक्षांश तक तथा देशान्तरीय विस्तार 20^0 पश्चिमी देशान्तर से 170^0 पश्चिमी देशान्तर तक है। इसकी उत्तर से दक्षिण तक लम्बाई लगभग 7200 किलोमीटर, महाद्वीप के उत्तर में आर्कटिक महासागर, पूर्व में अटलांटिक महासागर, पश्चिम में प्रशान्त महासागर और दक्षिण में दक्षिण अमेरिका महाद्वीप स्थित है । दक्षिण में यह महाद्वीप पनामा नहर द्वारा दक्षिण अमेरिका से पृथक किया गया है।

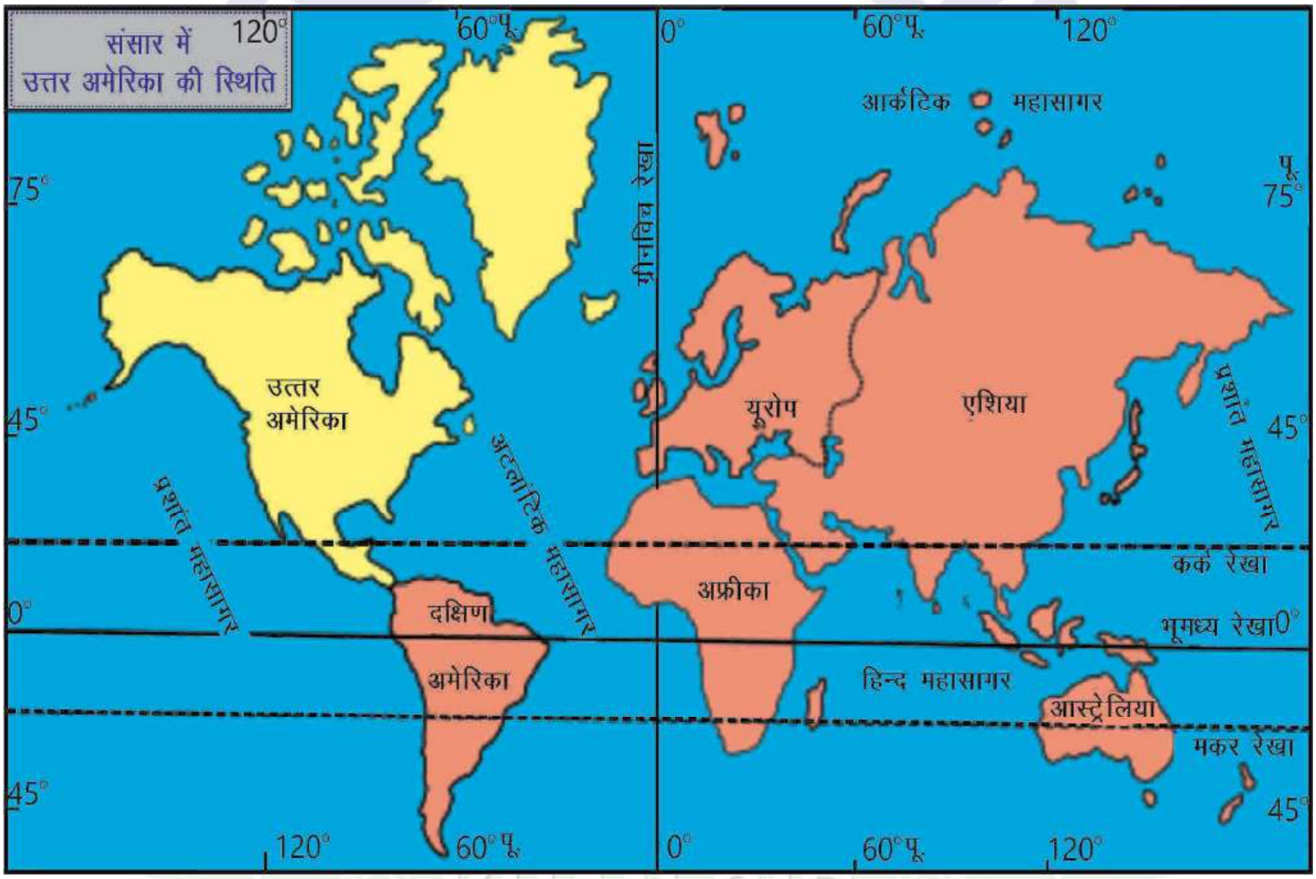

ऐंग्लो-अमेरिका का प्रादेशिक भूगोल (Regional Geography of Anglo-America)

ऐंग्लो-अमेरिका के अन्तर्गत विश्व के दो बड़े देश-कनाडा एवं अमेरिका आते हैं। इसके ऊपर ब्रिटिश प्रभाव के कारण इसे ऐंग्लो अमेरिका भी कहा जाता है। यह बहुभाषीय संस्कृति, बहु नृजातीय समुदायो का (Melting Pot) कहा जाता है।

भू-आकार : ऐंग्लो-अमेरिका को निम्नलिखित चार **भू-आकृतिक** प्रदेशों में बांटा गया है।

1. पश्चिमी पर्वत श्रृंखला
2. मध्यवर्ती मैदानी प्रदेश
3. अप्लेशियन पर्वत
4. समुद्र तटीय मैदान

1. **पश्चिमी पर्वत श्रृंखला :** इस पर्वत श्रृंखला का निर्माण हिमालय एवं आल्पस युग में हुआ। ऐंग्लो-अमेरिका के पश्चिमी भाग में समानान्तर पर्वत श्रेणियां है जिनके मध्य बेसिन तथा पठार स्थित हैं। पश्चिमी पर्वत श्रृंखला में तटीय पर्वत, सियरानेवादा तथा रॉकी पर्वत सम्मिलित हैं।

कार्डिलेरा

ऐसी पर्वत श्रृंखला जिसमें अनेक पर्वत श्रेणियाँ एक दूसरे के समानान्तर दूर-दूर तक फैली हुई होती हैं। उत्तर अमेरिका में इनके सम्मिलित रूप को 'कार्डिलेरा' कहा जाता है।

- **पश्चिमी पर्वतीय प्रदेश या कार्डिलेरा :** पश्चिमी पर्वतीय प्रदेश को ही कार्डिलेरा कहा जाता है। कार्डिले का विस्तार महाद्वीप के पश्चिमी भाग में उत्तर में अलास्का से लेकर दक्षिण में मैक्सिको तक है।
- **कास्केड श्रेणी :** प्रशांत महासागर के तट के साथ कास्केड श्रेणी (Benbankam Tandham) स्थित है। यह श्रेणी कैलिफोर्निया से लेकर अलास्का तक फैली हुई है। यह पर्वत श्रेणी युवा पर्वत हैं। इस क्षेत्र में ज्वालामुखी तथा भूकम्प सक्रिय हैं जिसका मुख्य कारण भू-गार्भिक हलचलें हैं। इस पर्वत की तीव्र तथा उच्च ढलाने हैं। इस क्षेत्र में कई उच्च शिखर हैं, जैसे - **माउंट रेनियर तथा माउंट शास्टा।**
- **सियरानेवादा श्रेणी :** यह श्रेणी प्रशांत महासागर के समानान्तर है तथा पूर्वी कैलीफोर्निया तथा पश्चिमी नेवादा राज्यों में फैली हुई है। यह श्रेणी भू-पटल पर दरारों के साथ-साथ उत्थान की क्रिया से बनी है।
- **रॉकी पर्वत :** यह पर्वत विषम पर्वत हैं। यह पश्चिमी तट तथा मध्यवर्ती मैदान के मध्य एक अवरोध हैं। यह पर्वत श्रृंखला तीन पर्वत श्रेणियों का संगम है। **जैसे - रॉकी पर्वत, मेकेन्ज़ी पर्वत तथा ब्रुक्स पर्वत। इनमें से रॉकी पर्वत श्रेणी सबसे लम्बी हैं।**

- **बेसिन तथा पर्वत क्षेत्र :** सियरानेवादा तथा रॉकी पर्वत के मध्य अन्तरपर्वतीय बेसिन मिलते हैं जिनमें कई ब्लॉक पर्वत तथा पठार हैं। संयुक्त राज्य में सबसे निचला प्रदेश मृत घाटी है। उत्तरी ऐरीज़ोना में कोलोरॉडो पठार पर स्थित ग्रान्ड कैनियन विश्व प्रसिद्ध है।
- **अन्तर-पर्वतीय पठार :** इस पठार पर युकोन नदी बहती है। इसके दक्षिण में ब्रिटिश कोलम्बिया पठार है जो कि 1500 मी. ऊंचा है। इसमें सकीना, पीस तथा फ्रेज़र नदियां बहती हैं तथा कई हिम झीलें पाई जाती हैं। ग्रेट सलेव झील तथा ग्रेट बीयर झील इस क्षेत्र की प्रमुख झीलें हैं। यह क्षेत्र लावा प्रदेश हैं।

2. **मध्यवर्ती मैदान :** ऐंग्लो-अमेरिका का मध्यवर्ती मैदान एक विशाल क्षेत्र में टैक्सास राज्य से लेकर उत्तरी कनाडा तक फैला हुआ है। यह रॉकी पर्वत से लेकर ओहायो, टैनेसी तथा मिसीसिपी राज्यों तक फैला हुआ है। 1000 देशांतर इसे दो भागों में बांटता है। ???
3. **अपेलेशियन पर्वत :** एक ऐंग्लो-अमेरिका का तीसरा प्रमुख धरातलीय प्रदेश है। यह पर्वत बलाबामा राज्य से लेकर उत्तर में कनाडा के क्यूबेक राज्य तक फैला हुआ है। यह पर्वत आयु में पुराने हैं तथा अधिक अपर्दित हैं। माऊंट मिचेल (2037 मीटर) सबसे ऊंचा शिखर है जो उत्तरी कैरोलीना राज्य में है। अलाबामा से लेकर न्यूजर्सी तक इस पर्वत के पूर्वी भाग को पीडमांट पठार कहते हैं। इस पठार से कई नदियां निकलती हैं जो झरने बनाती हैं जिनसे जल विद्त् उत्पादन होता है। इसे प्रपात रेखा कहते हैं।

   अपेलेशियन पर्वत विषम पर्वत हैं जिनमें कई पर्वत श्रेणियां पठार तथा नदी घाटियां फैली हुई हैं। अपलेशियन पर्वत इतने ऊंचे नहीं है इसलिये कृषि, व्यापार तथा आर्थिक क्रियाओं में बाधक नहीं हैं।
4. **समुद्र तटीय मैदान :** ये मैदान न्यूजर्सी से लेकर रियोग्राण्डे नदी तक अर्द्धवृत्ताकार हैं। इसमें मिसीसिपी की निचली घाटी के उपजाऊ क्षेत्र स्थित हैं। इसके पश्चिम में मध्यवर्ती मैदान तथा अपेलेशियन पर्वत, पूर्व में अंधमहासगर, दक्षिणी में खाड़ी मैक्सिको स्थित हैं।

ऐंग्लो-अमेरिका की भू-संरचना (Geostructure of Anglo-America)

1. **कैनेडियन शील्ड :** यह एक स्थिर भाग है जो चार बिलियन वर्ष पुराना है। यह किसी प्रमुख हलचल से मुक्त रहा है। यह वलित पर्वतों के अपरदन से बना पठार है। यह ग्रेट बियर झील, ग्रेट स्लेव झील, अथाबक्का झील तथा विनिपेग झील को मिलाने वाली रेखा के पूर्व में स्थित है। यह लगभग पैनीप्लेन है, जो **कार्टज़ शिस्ट, नीस** तथा **ग्रेनाईट** जैसे - **कठोर चट्टानों से बना है।**
2. **पश्चिमी क्षेत्र :** यह भाग किसी समय एक भूसन्नति था। इसमें तलछट में उत्थान क्रिया से सात करोड़ वर्ष पहले ऊंचे रॉकी पर्वत बने। कई भागों में दरारें हैं। ज्वालामुखी क्रिया तथा उत्थान अस्थिरता के प्रमाण हैं।
3. **पूर्वी भाग :** नदियों द्वारा तलछट के निक्षेप से पूर्वी तटीय मैदानों की रचना हुई है।
4. **महान् मैदान :** रॉकी तथा अपेलेशियन पर्वत के मध्य विशाल क्षेत्र में नदियों द्वारा तलछट के निक्षेप से यह मैदान बना है। यह प्रेयरी से लेकर मैक्सिको के तटीय मैदान तक फैला हुआ है। इस मैदान में मिसीसिपी तथा कई सहायक नदियां बहती हैं।

ऐंग्लो-अमेरिका 10 हजार वर्ष पूर्व हिम से ढका हुआ था। हिम चादर का विस्तार महान् झीलों से लेकर न्यूयार्क सेंट लूईस तथा सीटल तक था। अब इसका विस्तार उत्तरी भाग में ग्रीनलैंड में है।

कनाडा के पठार हिम अपर्दित पठार हैं। यहां बड़ी-बड़ी झीलों का निर्माण हुआ है। प्राचीन एगासीस झील कई छोटी झीलों में बंट गई है। रॉकी पर्वत पर हिम से बने कई भू-आकार मिलते हैं जैसे भू-आकार घाटियां, लटकती घाटियां ड्रमलिन, ऐरेट, हिमागार, हिमोढ़ तथा झीलें। मध्यवर्ती मैदान में हिमोढ़ों की रचना हुई है। कई राज्यों में रेत मिट्टी और बजरी से बने अंतिम हिमोढ़ मिलते हैं। नदी घाटियों में उपजाऊ लोएस निक्षेप मिलते हैं।

उत्तरी अमेरिका की नदियां एवं झीलें (Rivers and Lakes of North America)

प्रशांत महासागरीय जलप्रवाह : सब नदियों में से प्रशांत महासागर में गिरने वाली कोलोराडो तथा कोलम्बिया नदियां महत्त्वपूर्ण हैं। इन नदियों के लम्बे घुमावदारमार्ग हैं। कोलोराडो नदी कोलोराडो पठार को काटती हुई विश्व प्रसिद्ध गार्ज तथा ग्रांड केनियन की रचना करती है। अन्य नदियों में युकोन, स्कीना, फ्रेज़र, स्नेक, हम्बोल्ट, सेक्रीमण्टो तथा सेन जैकुएन प्रसिद्ध हैं।

1. युकोन, नदी यूकन पठार से निकलकर सबसे उत्तर अलास्का में बहती हुई बेरिंग सागर में गिरती है। जाड़े में इसका मुहाना तीन-चार माह तक जमा रहता है अतः व्यापार की दृष्टि से यह महत्त्वपूर्ण नहीं है।
2. **फ्रेजर नदी :** जो कोलम्बिया पठार से निकलकर वैंकोवर के निकट प्रशांत महासागर में गिरती है।

3. **कोलम्बिया नदी :** पोर्टलैंड नगर के निकट प्रशांत महासागर में गिरती है।
4. **सैक्रामेंटो और सन जोआक्विन नदियाँ :** जो रॉकी पर्वतमाला की पश्चिमी ढालों से निकलकर एक-दूसरे की विपरीत दिशा में बहने के बाद आपस में मिल जाती है। कैलिफोर्निया की प्रसिद्ध घाटी का निर्माण करने वाली ये दोनों नदियाँ पहले हिमनिर्मित घाटियों में बहती हैं जहाँ तीव्र ढाल के कारण इनकी धारा तेज पाई जाती है और फिर जलोढ़ मैदान बनाती हुई संयुक्त रूप में प्रशांत महासागर में प्रवेश करती है।
5. **कोलोरैडो नदी :** जो रॉकी पर्वतश्रेणी की पश्चिमी ढाल से निकलकर कोलोरैडो पठार को पार करती हुई कैलिफोर्निया की खाड़ी में गिरती है। यह प्रशांत नदी-प्रणाली की महत्त्वपूर्ण नदियों में से है जो कोलारैडो पठार में अति गहरी और सँकरी घाटी का निर्माण कर आगे बढ़ती है।

इन नदियों में कोलम्बिया और कोलोरैडो के मार्ग बहुत घुमावदार हैं, अतः ये लम्बी हैं। कोलम्बिया पश्चिमी भाग की सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण नदी मानी जाती है जिसमें कई बांध बनाए गए हैं और जल विद्युत उत्तपन की जाती है। कोलम्बिया के सर्वप्रसिद्ध बांध हैं 'ग्रैंड कूली और 'बॉन विले'। कोलोरैडो नदी पर भी कई बाँध बनाए गए है। और पर्याप्त मात्रा में जल विद्युत-उत्पादन होता है। उत्तरी अमेरिका के प्रसिद्ध बाँध बोल्डर और हूवर इसी पर बने हैं।

आर्कटिक नदी-प्रणाली (Arctic River System)

आर्कटिक महासागर की ओर प्रवाहित होने वाली नदियों को दो भागों में बाँटा जा सकता है एक वे जो सीधे आर्कटिक महासागर में गिरती हैं, **जैसे - मेकेंजी** और दूसरे वे जो आर्कटिक महासागर के आगे हडसन की खाड़ी में गिरती हैं, **जैसे - नेलसन।**

कनेडियन शील्ड की सीमा पर अनेक झीलें हैं जो छोटी-छोटी नदियों द्वारा एक-दूसरी से जुड़ी हुई हैं। इन झीलों के माध्यम से इस क्षेत्र का जल आर्कटिक महासागर में पहुँचता रहता है।

मेकेंजी ही इस क्षेत्र की सबसे बड़ी नदी है जिसकी लम्बाई 4317 किलोमीटर है। मेकेंजी तथा अन्य छोटी नदियाँ जाड़े में जम जाती हैं और गर्मी पड़ने पर (वसंत ऋतु में) जब पिघलती हैं तो आसपास की भूमि को दलदल बना देती हैं।

कनेडियन शील्ड की सीमा पर स्थित कुछ झीलों के माध्यम से इस क्षेत्र का जल हडसन की खाड़ी में भी पहुँचता रहता है। उदाहरणार्थ, रॉकी पर्वत से निकलने वाली उत्तरी सस्केचवान और दक्षिणी सस्केचवान से नदियों का जल विनिपेग झील में पहुँचता है।

अटलांटिक नदी-प्रणाली (Atlantic River System)

लैब्राडोर पठार से निकलकर सीधे अटलांटिक महासागर में प्रवाहित होने वाली नदियाँ, जैसे **हैमिल्टन**।

सेंट लारेंस को एक स्वतंत्र प्रवाह-प्रणाली माना गया हैं ओंटैरियो झील से सेंट लारेंस खाड़ी तक के समस्त निचले प्रदेश में यह प्रति वर्ष नई मिट्टी बिछाती है जो कृषि की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है। फिर इस नदी से होकर महादेश के भीतरी भाग तक जल-यातायात की सुविधाएँ हैं। सेंट लारेंस जलमार्ग अंतरराष्ट्रीय व्यापार में सहायक सिद्ध हुआ।

अपलेशियन पर्वत की पूर्वी ढालों से अनेक छोटी नदियाँ निकलकर अटलांटिक महासागर में समा जाती हैं जिनमें कुछ प्रमुख के नाम हैं **हडसन, मोहावक, डिलावेयर जेम्स** (और पोटामैक इनमें मोहावक, हडसन की सहायक नदी है।

अपलेशियन पर्वत के पश्चिमी भाग से तथा रॉकी पर्वतश्रेणी के पूर्वी भाग से अनेक छोटी-बड़ी नदियाँ निकलकर विशाल मध्यवर्ती मैदान होती हुई अपना जल मेक्सिको की खाड़ी में गिराती हैं जिनमें सर्वप्रसिद्ध है **मिसीसीपी, ओहायो, मिसौरी,** अरकानसस, और **रेड** (इसी की सहायक नदियाँ हैं। मिसीसीपी उत्तरी अमेरिका की सबसे लम्बी नदी है और इसका मैदान संसार के सर्वाधिक उपजाऊ मैदानों में से एक है। यह नदी अपने मुहाने पर **चिड़िया के पंजे-जैसा डेल्टा** बनाती है। अपनी सहायक नदी मिसौरी (3704 किलोमीटर) से संयुक्त होकर यह संसार की सबसे लम्बी नदी बन जाती है। स्वतंत्र रूप से मेक्सिको की खाड़ी में गिरने वाली अन्य नदियाँ **अलबामा रियोग्राण्डे** आदि हैं।

आन्तरिक नदी-प्रणाली (Inland River System)

रॉकी पर्वतीय प्रदेश के बीच **'ग्रेट बेसिन'** ऐसा विशालतम पठार है, जिसमें बहने वाली नदियाँ समुद्र तक न जाकर स्थलीय भाग के बीच रह जाती हैं और अनेक झीलों को जन्म देती हैं। स्वभावतः वे **झीलें खारी**, बड़ी और छिछली होती हैं। ग्रेट बेसिन की कुछ झीलों के नाम ये हैं - **ग्रेट साल्ट, पिरामिड, फ्रैंकलिन, बीयर, उटा**।

जलवायु (Climate)

उत्तर अमेरिका की जलवायु को मुख्य रूप से चार कारक प्रभावित करते हैं :

1. महाद्वीप का अक्षांशीय विस्तार ।
2. महाद्वीप की धरातलीय विविधता ।
3. स्थाई हवाएँ तथा ।
4. जलधाराएँ।

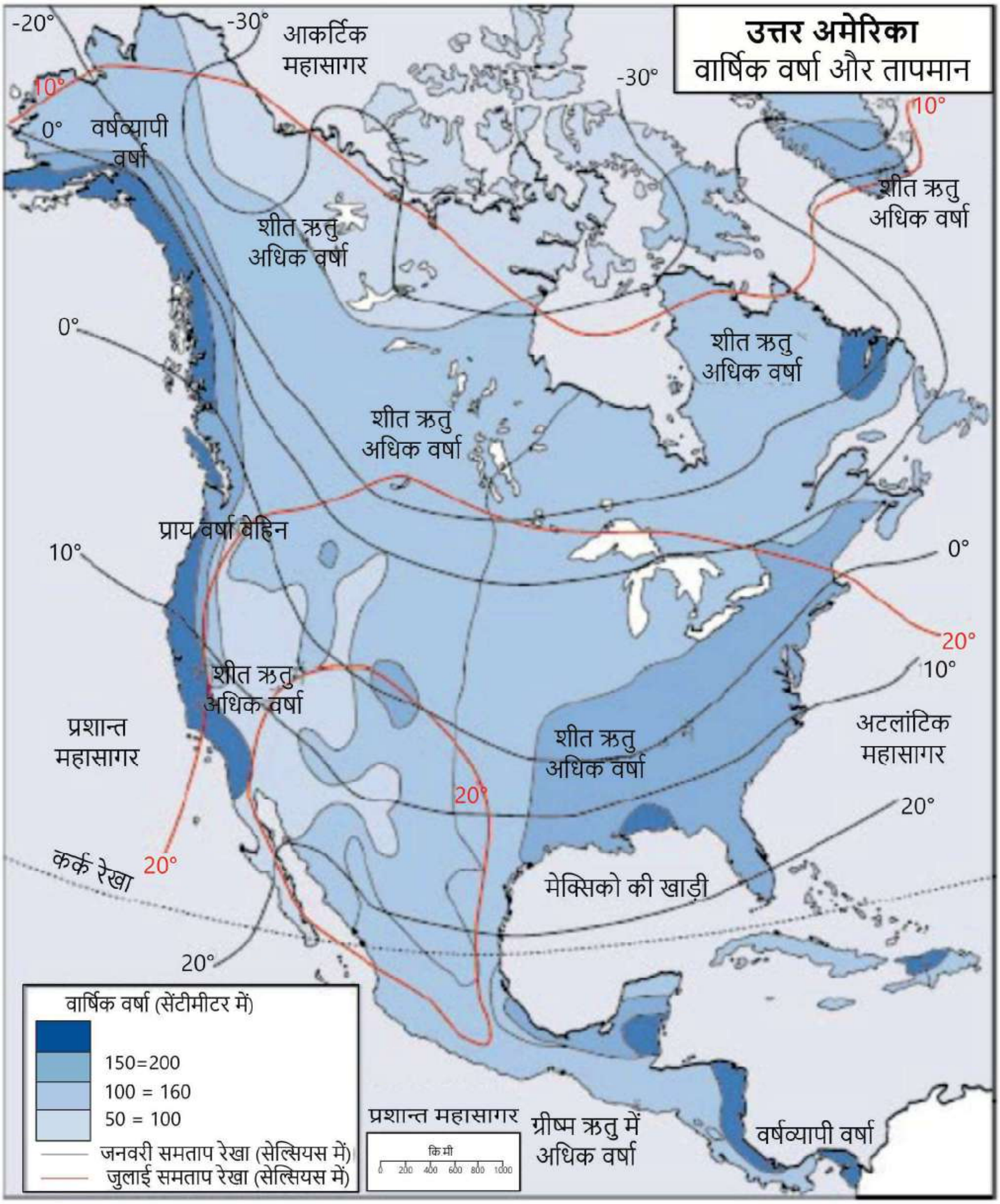

1. **स्थिति और विस्तार :** उत्तरी अमेरिका की अधिकतर भूमि और विशेषकर पूर्व-पश्चिम इसकी अधिकतम चौड़ाई (5000 कि.मी.) कर्क रेखा से बहुत उत्तर शीतोष्ण कटिबंध में मिलती है। उष्ण कटिबंध में कर्क रेखा के दक्षिण इसका स्थल भाग जहाँ बहुत कम पड़ता है, वहाँ यह महादेश सँकरा हो गया है। अतः इसकी जलवायु मुख्य रूप से शीतोष्ण कटिबंधीय है। 10^0 से 80^0 उत्तरी अक्षांशों के बीच स्थित होने के कारण इसका उत्तरी भाग उत्तरी ध्रुव के निकट पड़ जाता है, अतः बहुत सर्द रहता है और दक्षिणी ओर विषुवत् रेखा के निकट पड़ जाता है अतः गर्म रहा करता है।

   महादेश का विस्तृत मध्यवर्ती भाग समुद्र से दूर पड़ जाने के कारण विषम या महाद्वीपीय जलवायु (का अनुभव करता है और वहाँ वार्षिक तापांतर बहुत अधिक बढ़ जाता है।

2. **धरातलीय विविधता का प्रभाव :** पश्चिम में कार्डिलेरा पछुआ पवनों को रोककर अधिक वर्षा करता है, जबकि पूर्वी ढाल पूर्णतः वृष्टि छाया में आने से बहुत कम वर्षा प्राप्त करता है । यही कारण है कि प्रेयरी के मैदान में न्यून वर्षा होती है, किंतु प्रेयरी के मैदान से जैसे हम पूर्व तथा दक्षिण-पूर्व की ओर के पठारों व पर्वतों की ओर बढ़ते हैं, वर्षा की मात्रा भी बढ़ती जाती है। महाद्वीप के उत्तरी भाग में वर्षा हिमपात के रूप में और कम मात्रा में होती है, क्योंकि यह क्षेत्र निचला मैदान है।

3. **पर्वतों की उत्तर-दक्षिण स्थिति :** इस महादेश में एशिया या यूरोप की तरह उच्च पर्वत श्रेणियों की दिशा पूर्व-पश्चिम न होकर उत्तर-दक्षिण है, जिसके फलस्वरूप आर्कटिक या ध्रुव की सर्द हवाएँ (spring awards) दक्षिण में काफी दूर तक पहुँच जाती हैं और जलवायु को सर्द एवं शुष्क बना डालती हैं। पर्वतों की इस स्थिति से मेक्सिको खाड़ी की ग्रीष्मकालीन वाष्पभरी हवाएँ उत्तर की ओर काफी दूर तक पहुँच कर वर्षा करती हैं।

   पश्चिम में रॉकी पर्वतश्रेणी काफी ऊँचाई के कारण पश्चिमी आर्द्र पवनों को आगे बढ़ने से रोकती हैं, अतः उसकी इस स्थिति से प्रशांत महासागरीय तट ही अधिक वृष्टि पाते हैं और पर्वतश्रेणी के पूर्व का विस्तृत भाग वृष्टि छाया में पड़ जाता है।

   पूर्व में अपलेशियन पर्वत अपेक्षाकृत कम ऊँचा है और कम विस्तृत है, अतः जलवायु को विशेष प्रभावित नहीं करता, फिर भी पूर्वी भाग में समुद्र से आनेवाली हवाएँ अधिक वर्षा किया करती है, इसके कारण वृष्टि छाया नहीं होती।

4. **स्थाई पवनों का प्रभाव :** पश्चिम में कार्डिलेरा और पूर्व में उच्च भूमि, दोनों उत्तर से दक्षिण तक फैली हैं, इन दोनों के बीच विशाल मैदान हैं। शीतकाल में उत्तर से आने वाली ठंडी ध्रुवीय पवनें तथा ग्रीष्म में दक्षिण से चलने वाली गर्म पवनें सम्पूर्ण मैदानी भाग को प्रभावित करती हैं। इसलिए यह शीतकाल में ठंडा व ग्रीष्म में गर्म रहता है।

   उत्तरी-पश्चिमी तट सुदूर पछुआ हवाओं के प्रभाव में वर्षभर रहता है, इसलिए यहाँ वर्ष भर वर्षा होती है। वायुदाब की पेटियाँ दक्षिण की ओर खिसकने से शीतकाल में पश्चिम केलिफोर्निया का क्षेत्र पछुआ पवनों के क्षेत्र में आ जाता है, जिससे यहाँ शीत ऋतु में वर्षा होती है।

   मैक्सिको प्रदेश को मानसूनी पवनें प्रभावित करती हैं जिससे ग्रीष्मकाल में वर्षा होती है, जबकि मैक्सिकों की खाड़ी और दक्षिण-पूर्वी तट व्यापारिक हवाओं के प्रभाव में रहने से वर्ष भर वर्षा प्राप्त करते हैं।

प्रचलित पवन और वायुराशियाँ (Prevailing Winds and Air Masses)

पश्चिमी द्वीप समूह और महादेश के दक्षिणी संकरे भाग में (10^0 से 20^0 अक्षांशों के बीच) प्रचलित पवन उत्तर-पूर्वी वाणिज्य पवन हैं। इनमें पश्चिमी द्वीप समूह और निकटवर्ती भागों में वर्ष भर वर्षा होती है। गर्मी के दिनों में जब महादेश के भीतरी भाग गर्म होने लगते हैं तो ये पवन मेक्सिको की खाड़ी से दक्षिणी पवन के रूप में भीतर प्रवेश करते हैं और वर्षा करते हैं।

इस महादेश पर चार वायुराशियां प्रवाहित होती रहती हैं :

1. कनाडा-स्थिति ध्रुवीय महाद्वीपीय
2. कनाडा के दोनों और समुद्रों में स्थित ध्रुवीय सामुद्रिक
3. मेक्सिको-स्थित उष्ण महाद्वीपीय
4. मैक्सिको के दोनों और समुद्रों में स्थित उष्ण सामुद्रिक वायुराशियाँ।

इनमें ध्रुवीय महाद्वीपीय वायुराशि सर्द और शुष्क है, जिससे जाड़े में उत्तरी भाग का तापमान अत्यधिक गिर जाता है। गर्मी में इसकी अस्थिरता देखी जाती है। ध्रुवीय सामुद्रिक वायुधाराएं अपेक्षाकृत गर्म होती हैं। परन्तु उत्तर प्रशांत वाली वायुराशि रॉकी पर पहुँचते ही ठंडी हो जाती है और उसमें स्थिरता आ जाती है। उत्तर अटलांटिक वाली वायुराशि से तटीय भाग में कुहासा छा जाता है और ध्रुवीय महाद्वीपीय से मिलकर यह मौसम में परिवर्तन लाती है।

दक्षिण-स्थित उष्ण महाद्वीपीय वायुराशि अत्यन्त गर्म और शुष्क होती है किन्तु जब यह उत्तर की ओर बढ़कर ठंडी वायुराशि से मिलती है तो वर्षा करने में समर्थ हो जाती है। जाड़े में इसका प्रभाव-क्षेत्र संकुचित रहता है और इससे वर्षा नहीं होती। सबसे अधिक प्रभावशाली प्रशांत और अटलांटिक की उष्ण सामुद्रिक वायुराशियाँ हुआ करती हैं जो पर्याप्त उष्ण और आर्द्र होती हैं ये तटवर्ती भागों में वर्षा प्रदान करने में सहायक होती हैं। इनकी अस्थिरता ग्रीष्मकाल में देखी जाती हैं। दक्षिण-पूर्वी तट पर इससे चक्रवात उत्पन्न होते हैं जो हरीकेन कहलाते हैं।

स्थानीय पवन (Local Wind)

जाड़े में जब सर्द ध्रुवीय पवन उत्तरी मैदान में प्रवेश करते हैं तो वहाँ का तापमान गिर जाता है। इन्हीं दिनों प्रशांत महासागर से चलने वाले स्थानीय पवन रॉकी को पार कर जब पूर्व में उतरते हैं तो दबाव के कारण गर्म हो जाते हैं। उनसे मैदानी भाग में तापमान बढ़ जाता है और घंटे-भर के अंदर 25 से 30^0 बर्फ गल जाती है। अलबर्टा में उतरनेवाला यह स्थानीय पवन चिनूक के नाम से प्रसिद्ध है जो शुष्क हुआ करता है।

जलधाराओं का प्रभाव : गर्म तथा ठंडी जलधाराएँ जिन तटों के समीप बहती हैं, वे वहाँ की जलवायु को अधिक प्रभावित करती है। महाद्वीप के दक्षिणी-पूर्वी तट पर गल्फस्ट्रीम और उत्तरी-पश्चिमी तट पर अलास्का की गर्म धाराएँ बहती हैं। इनके प्रभाव से तटीय भागों का तापमान सदैव ऊँचा रहता है। हवाएँ इनसे गर्म होकर नमी ग्रहण कर वर्षा करती है।

लेब्रेडोर की ठंडी धारा उत्तर पूर्वी भाग तथा कैलिफोर्नियों की ठंडी धारा दक्षिणी-पश्चिमी भाग के निकट बहती हैं। इससे तटीय क्षेत्रों की जलवायु अधिक ठंडी हो जाती है।

लैब्राडोर और कैलिफोर्निया की धाराएँ सामान्य रूप से तापमान गिरा देती हैं जबकि उत्तरी प्रशांत और गल्फस्ट्रीम के प्रभाव से तापमान बढ़ जाता है। गर्म और ठंढी जल-धाराएँ जब आपस में मिलती हैं तो वहाँ घना कुहासा छा जाता है जैसे, न्यूफाउंडलैंड के निकट (उत्तर-पूर्वी भाग में)।

उत्तरी अमेरिका के जलवायु प्रदेश (Climate Regions of North America)

1. **आर्कटिक या टुंड्रा प्रदेश :** यह प्रदेश उत्तरी भाग में 600 से 800 उत्तरी अक्षांशों के बीच (पश्चिम में अलास्का से पूरब में लैब्राडोर और ग्रीनलैंड तक) एक पेटी के रूप में विस्तृत है जहाँ दीर्घकालीन शीतऋतु मिलती है। ध्रुव के निकट स्थित होने के कारण यहां नौ महीनों तक तापमान 0^0 से भी कम रहा करता है अतः तुषारपात (snow fall) होता रहता है और भूमि हिमाच्छादित हो जाती है। शीतऋतु में यहाँ तेज बर्फीली आँधी चला करती है जिसे ब्लिजार्ड (blizard) कहते हैं। यहाँ की ग्रीष्मऋतु छोटी (3 महीने की) होती है, जिसमें तापमान 100^0 से अधिक नहीं जाता। उस समय धरती पर पड़ा हिम पिघलने लगता है और मिट्टी गीली तथा दलदल-सी हो जाती है। इस मिट्टी में ही शैवाल उगती है जो रेनडियर का प्रमुख भोजन है।

2. **उपध्रुवीय या शीतोष्ण प्रदेश (टैगा प्रदेश) :** यह प्रदेश आर्कटिक प्रदेश के ठीक दक्षिण में स्थित है और पश्चिम से पूरब तक एक पट्टी में विस्तृत है। यहाँ भी शीतऋतु लम्बी मिलती है और उस ऋतु में समस्त प्रदेश हिमाच्छादित रहता है। 6 से 8 महीने तक तापमान 0^0 से कम रहा करता है।

   वर्षा ध्रुवीय सीमांत चक्रवातों (Polar Front degressions) से हुआ करती है। शीतलकाल में यहाँ भी बर्फीली आँधी चलती है।

3. **समशीतोष्ण संमुद्री जलवायु प्रदेश (पश्चिम यूरोप-तुल्य जलवायु प्रदेश) :** इसका विस्तार 400 से 600 उत्तर अक्षांशों के बीच पश्चिमी तट पर है जहाँ समुद्र का गहरा प्रभाव पड़ता है। इसके किनारे से गुजरनेवाली गर्म जलधारा इस प्रदेश की जलवायु को प्रभावित करती है जिसके कारण शीतकाल में भी यहाँ बर्फ नहीं जम पाती।

   यह प्रदेश पश्चिमी पवन की पेटी में पड़ने के कारण वर्ष भर वर्षा पाता है। अधिक वर्षा के कारण यहाँ के पर्वतीय भाग में सघन वृक्ष मिलते हैं और लकड़ी काटने का उद्यम प्रचलित है।

4. **भूमध्यसागरीय जलवायु प्रदेश :** यह प्रदेश पश्चिमी तट पर 300 से 400 उत्तरी अक्षांशों के बीच स्थित है (मुख्यतः U.S.A. के कैलिफोर्निया राज्य में विस्तृत), जहाँ जाड़े में 10-12^0 तापमान मिलता है और गर्मी में 20-25^0 तक। समस्त वर्षा जाड़े में होती है (आर्द्र पश्चिमी पवन से) किन्तु गर्मी में यह प्रदेश स्थल की ओर से चलने वाले शुष्क वाणिज्य पवन की पेटी में आ जाने के कारण वर्षा नहीं पाता। ग्रीष्म ऋतु में स्वच्छ आकाश और साधारण गर्मी तथा जाड़े में हल्की ठंढक और वर्षा इस प्रदेश की प्रमुख विशेषता है।

5. **प्रेयरी या मध्य महाद्वीपीय प्रदेश :** इसकी स्थिति महादेश के भीतरी भाग में (रॉकी पर्वतमाला से सटे पूरब) है जो समुद्री प्रभाव से दूर है, अतः यहाँ वर्षा का अभाव है।

6. **लारेंसीय जलवायु प्रदेश :** इसकी स्थिति वृहत् झीलों के आसपास (पूर्वी भाग में) है जहाँ शीतोष्ण चक्रवातों से सालोभर वर्षा होती है। वर्षा पूरब से पश्चिम की ओर घटती जाती है। इसकी मात्र 50 से 100 सेमी. रहती है। यहाँ लैब्राडोर की ठंडी जलधारा ठंढक बढ़ा होती है।

   तटवर्ती क्षेत्रें में लैब्राडोर की ठंढी जलधारा और दक्षिण की गल्फ स्ट्रीम के मिलन के कारण कुहासा छा जाता है।

7. **आर्द्र महाद्वीपीय जलवायु प्रदेश :** यह प्रदेश 300 से 450 उत्तरी अक्षांशों के बीच पूर्वी भाग में स्थित है। **संयुक्त राज्य (U.S.A.)** का दक्षिण पूर्वी भाग इसी जलवायु प्रदेश के अंतर्गत आता है जिसकी जलवायु शीतोष्ण मानसून (चीन-तुल्य जलवायु) से बहुत मिलती-जुलती है।

   वर्षा मुख्यतः गर्मी में और उत्तर-**पूर्वी वाणिज्य पवन** (S.E. Trade Winds) से होती है जो पश्चिम की ओर कम होती जाती है। गर्मी में यहां दक्षिण से आते हुए उष्ण चक्रवात पहुँच जाते हैं जो 'टौरनेडो' कहलाते हैं। गल्फ की आरे से भी ग्रीष्मऋतु में आर्द्र हवाएँ यहाँ पहुंचकर वर्षा करती हैं। इस प्रदेश की औसत वार्षिक वर्षा 100 सेमी है, अतः कृषि के लिए यह प्रदेश बड़ा उपयुक्त है।

8. **उष्ण मरुस्थलीय प्रदेश :** यह प्रदेश महादेश के पश्चिमी भाग में 200 से 300 उत्तरी अक्षांशों के बीच मिलता है जिसमें संयुक्त राज्य का दक्षिण-पश्चिमी भाग और मेक्सिको का उत्तर-पश्चिमी भाग सम्मिलित है।

   रॉकी पर्वतश्रेणी की पश्च क्षेत्र में स्थित इस प्रदेश में कोलोरैडो और एरीजोना के मरुस्थलीय भाग मुख्य रूप से आते हैं जहाँ शुष्क वाणिज्य पवन पहुँचा करते हैं और भीषण गर्मी पड़ा करती है।

9. **उष्ण और आर्द्र जलवायु प्रदेश :** उत्तरी अमेरिका का सबसे दक्षिणी भाग जो मध्य मेक्सिको से पनामा तक विस्तृत है, पर्वतीय है, अतः उष्ण क्षेत्र में स्थित होते हुए भी ऊँचाई के कारण अत्यधिक गर्म नहीं हो पाता। वाणिज्य पवन की पेटी में स्थित होने के कारण वर्षभर पूर्वी समुद्र से आर्द्रता लेकर पवन चला करते हैं और वर्षा करते हैं। यहाँ मानसूनी, वनस्पति भी पायी जाती है (जैसे शीशम, सागवान, सखुआ, बांस इत्यादि के वन)।

10. **उच्च पर्वतीय जलवायु प्रदेश :** यह रॉकी का उच्चपर्वतीय भाग है जहाँ अधिक ऊँचाई के कारण तापमान सदा कम रहता है। बढ़ते अक्षांश के अनुसार भी तापमान कम होता जाता है। वर्षा की मात्र भी कहीं एक-सी नहीं मिलती। उच्च अक्षांशों में पश्चिमी ढाल पर और निम्न अक्षांशों में पूर्वी ढाल पर वर्षा अधिक होती है।

Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR